ज्वार

परिचय एवं महत्व : चारा एवं धान्य दोनों फसलों के रूप में ज्वार व बाजरे का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भागलपुर जिले में मुख्य रूप से ज्वार की फसल चारे के लिए उगायी जाती है। जिसमें हरा चारा, सूखा चारा व साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जाता है। इसके दानों का आटा बनाकर रोटी के रूप में भी खाया जाता है ।

मृदा का चुनाव : ज्वार की अच्छी खेती के लिए जल निकास युक्त बलुई दोमट मृदा उपयुक्त रहती हैं।

खेत की तैयारी : 2–3 जुताई कल्टीवेटर से करके खेत को तैयार कर लेना चाहिए ।

बीज दर– 12–15 कि.ग्रा. बीज / हेक्टेयर पर्याप्त होता है। बीजोपचार के लिये कैप्टान/थीरम 2.5 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करना चाहिए।

बुआई का समय–खरीफ में जून महीने में कर लेनी चाहिये ।

बुआई की दूरी–पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 से.मी तथा पौधे से पौधे की दूरी 15 से.मी. रखते हैं । प्रति हेक्टेयर 150000 पौधे रहने पर उत्पादन अच्छा मिलता है ।

बुआई की गहराई – बीज को 3–4 से.मी. गहरा बोना चाहिये ।

उर्वरक प्रबंधन

जातियाँ	पोषक तत्वों की मात्रा (कि.ग्रा./हे.)			प्रयोग विधि
	नत्रजन	फॉस्फोरस	पोटाश	
1. देशी	50	30	25	नत्रजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय नत्रजन की शेष मात्रा बुआई के 25–30 दिन बाद खड़ी फसल में दें ।
2. संकर				
सिंचिंत	100	50	40	
असिंचित	60	40	30	

सिंचाई एवं जल प्रबंधन–जल निकास का उचित प्रबंध करना चाहिए। फसल में फूल आने के समय नमी न रहने पर सिंचाई करना आवश्यक होता है।

खरपतवार प्रबन्धन–खरपतवारों का प्रकोप सदैव फसल की प्रारंम्भिक अवस्था में रहता हैं । कर्षण क्रियाओं के द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए निकाई–गुड़ाई करते रहना चाहिए या रासायनिक दवा सीमाजीन या एट्राजीन (50:घुलनशील पाउडर) की 0.75 सक्रिय तत्व 600 लीटर पानी के साथ प्रति हेक्टयर में प्रयोग करना चाहिए। यदि फसल में चौड़ी पत्ती वाली खरपतवार ज्यादा हो तो 2–4 डी. 0.6 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व तथा 600 लीटर पानी में घोलकर बुआई के 20–25 दिन पर प्रति हेक्टयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

अन्तर्वर्ती फसलें–ज्वार के साथ दलहनी फसलों जैसे सोयाबीन, अरहर, मूंग, उड़द को लगाना लाभदायक होता है।

फसल चक्र–ज्वार–गेहूँ/जौ/सरसों/चना/मटर/मसूर/आलू इत्यादि लिया जा सकता है ।

उपज–देशी प्रजातियों से 15–20 क्विंटल तथा संकर प्रजातियो से 35–40 क्विंटल दाना प्राप्त हो जाता है । साथ ही 100–150 क्विंटल सूखा चारा भी मिल जाती है।